राजनीति विज्ञान प्रतिपण

काली मार्क्स

मार्क्स का अलगाव का सिद्धांत —

वह वस्तु

श्रमिक के रूप में उसके विरोध में स्थित है। तीसरे, अलगाव इस कारण से भी होता है श्रमिक के लिए वह कार्य स्वैच्छिक नहीं होत वह उसपर जबरन थोपा जाता है। यह एक की जबरन मजदूरी है जो उसे करनी पड़ती यह कार्य उसकी अपनी आवश्यकताओं की के लिए नहीं होता, बल्कि दूसरों की आवश्य की पूर्ति के लिए होता है। इसलिए इसक काम उसके लिए निरस मजदूरी होती है उबाऊ और थकाने वाली होती है। बारह तक वह श्रमिक बुनाई और कताई करता मशीन छेद सकता है और ढलाई कर वह मकान बनाता है, बेलचे से मिट्टी है, पत्थर तोड़ता है, सिर पर बोझा ढोता उसे मालूम नहीं होता है कि ये सब क कर रहा है। अलगाव का एक और पह जीवित श्रमिक के श्रम के ऊपर मृत, वस्तु निर्माणकारी मशीनी श्रम का वर्चस्व प्रक्रिया में कामगार या श्रमिक मशीन

उसकी मशीनें उसके वास्तविक मालिक बन जाते हैं। वह स्वयं से पराया हो जाता है। इस कारण से मनुष्य स्वयं को केवल जैव कार्यों (जैसे खाना, पीना, बच्चे पैदा करना इत्यादि) में ही स्वतंत्र अनुभव करता है जबकि उसके मानवीय कार्यों में उसकी स्थिति जानवरों जैसी होती है। इसके भीतर का जानवर इन्सान बन जाता है, उसके अंदर का मानव जानवर के समान हो जाता है मार्क्स आगे इसकी व्याख्या करते हुए कहता है कि :

जितना कम तुम खाओगे, पिओगे, पुस्तकें खरीदोगे, सिनेमा देखोगे, मयखानों या वेश्याओं में जाओगे और जितना तुम सोचोगे, प्यार करोगे, चाहो-गाओगे, चित्र बनाओगे आदि उतना ही तुम बचत कर सकोगे, और उतना ही अधिक तुम्हारा खजाना बढ़ेगा, जिसे न तो कीड़े खाएंगे और न ही जंग उसे खराब करेगा - यह तुम्हारी पूँजी है। तुम्हारा जितना अस्तित्व जितना कम होगा उतना ही कम तुम अपने जीवन को अभिव्यक्त करोगे। जितनी अधिक बचत सम्पत्ति तुम्हारे पास होगी उतना ही तुम्हारा जीवन अलगाव/अन्यदेशीकृत होगा और उतनी ही अधिक तुम्हारी अलगाव/अन्यदेशीकृत व्यक्तित्व की बचत होगी।